साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 54, फरवरी(प्रथम) , 2019

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अँग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' का डॉ० अनिल चड्डा द्वारा हिन्दी अनुवाद

लेखक – डॉ० रिक लिंडल
अनुवादक – डॉ० अनिल चड्डा

अध्याय 11

मृत्यु के समीप

बहुत वर्ष बीत गये, और कनाडा में एक चमचमाती दोपहर में, जब वह अपने कुत्ते को घुमा रहा था, तो उसे एक कार ने टक्कर मार दी. उस टक्कर की शक्ति ने उसके शरीर को गाड़ी की छत के ऊपर उछाल दिया इससे पहले कि वह सिर के बल उल्टपलट कर पीछे पटरी पर गिरता. टक्कर लगते समय, उसकी चेतना उसके शरीर से निकल गई, और अचानक ही वृद्ध आत्मा प्रकट हो गई. जब रिक्की अपने शरीर के ऊपर हवा में तैर रहा था, पूरी तरह से जागरूक, उसने अपने आप में सोचा:[61] व्हयू. अभी-अभी क्या हुआ था?

वृद्ध आत्मा, जो उसके ही खड़ी हुई थी,ने उसके विचार पढ़ लिये और कहा, "तुम अपने शरीर से बाहर फेंक दिये गये थे."

"मेरा कुत्ता कहाँ है?"

"वह बढ़िया है, जब तुम्हे कार ने टक्कर मारी थी वह उससे एकदम पहले दूसरी ओर भाग गया था."

61 जांच के क्षेत्र में वृहत शोध के लिये, कृपया पिम वन लोम्मेल. कांसीअसनेस बियॉन्ड लाइफ. न्यू यॉर्क: हार्पर कॉलिंस, 2010 देखें. इसके अतिरिक्त; माइकल न्यूटन. डेस्टिनी ऑफ़ सोल्स. सेंट पाल:ल्युएलिन पब्लिकेशन्स, 2000 भी देखें.

रिक्की, अभी भी उस टक्कर के बाद अजीब अनुभव से चक्कर खाता हुआ, बोला, “यह अच्छा है.”

“यह अजीब है. मैं उससे ज्यादा जीवंत और चौकन्ना महसूस कर रहा हूँ जब अपने शरीर में था`.”

“शरीरों को हमेशा ही आत्मा के ऊपर तना हुआ महसूस किया जाता है, क्योंकि भौतिक संसार में कंपन का स्तर कम है. तुम्हे यह जान कर हैरानी हो सकती है कि मृत्यु के समय अपने शरीर को छोड़ना उससे कम दर्दनाक है जब तुम गर्भावस्था में भ्रूण में दाखिल होते हो.”

“क्या मैं मर चुका हूँ? मेरा मतलब है क्या मेरा शरीर मृत है?”

“नहीं, तुम्हारा शरीर अचेतन अवस्था में है. तुम अभी मरे नहीं हो.”

कुछ मिनटों बाद एक एम्बुलेंस पहुंची, और रिक्की के शरीर को बेहोशी की हालत में हस्पताल ले जाया गया, सिर में एक गंभीर चोट लगने से. वृद्ध आत्मा उसके साथ एम्बुलेंस में गई, और, जब वह वहाँ लेटा हुआ था, तो रिक्की अपने शरीर से कुछ इंच ऊपर तैरता रहा.

“मुझे कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा. मुझे यह एहसास अच्छा लग रहा है. यह ऐसा है जैसे मैं हवा में तैर रहा हूँ.”

“अरे तुम तैर ही रहे हो.”

एम्बुलेंस हस्पताल के सामने रुकी, और रिक्की को तत्काल ही एक स्ट्रेचर के ऊपर डाल कर दूसरे तल पर आपातकालीन कमरे में ले जाया गया. निगरानी करने वाले सभी तरह के यंत्र इकट्ठे किये गये और उसके शरीर के साथ लगा दिये गये, साथ ही साथ उसकी नसों में ड्रिप भी लगा दी गई. नर्स ने उसके पर्स में खोज कर उसका पहचान पत्र निकाला और उसके पति, जोहन को फोन किया. वह बहुत वर्षों से शादीशुदा थे.

“आओ हम देखते हैं तुम्हारे शरीर को कितनी गंभीर चोट लगी है.”

रिक्की ने, अपने शरीर को नीचे की ओर देखते हुए, पाया, “ओह, यह अच्छा नहीं लग रहा. इसे देखो....यह अव्यवस्थित है. मेरे चेहरे पर वह सूजन. मैं बहुत डरावना लग रहा हूँ.”

वृद्ध आत्मा ने, अगले कुछ मिनटों का पूर्वानुमान लगाते हुए, कहा,”आओ, सैर के लिये चलते हैं. जब जोहन यहाँ पहुँचेगा तो ध्यान बंटने वाला है.”

“ठीक है. अच्छा विचार है. मैं जानता हूँ कि मेरा शरीर काफी ख़राब लग रहा है, लेकिन मैं अच्छा महसूस कर रहा हूँ. मैं कहाँ हूँ? क्या यह आध्यात्मिक आयाम है?”

“नहीं, तुम उसी जगह पर हो जहाँ भूत और दूसरी देहमुक्त आत्माएं रहती हैं. तुम अभी भी धरती की सतह पर हो, लेकिन उस आयाम से थोड़ा सा हट कर.”

“ओह. मुझे याद है कि तुमने मुझे प्रेतों के अस्तित्व के बारे में कई वर्षों पहले बताया था. क्या मैं भूत हूँ?”

“हाँ, एक तरह से बोलो तो, लेकिन तुम्हारा शरीर अभी भी जीवित है. जिस तरह की चेतन जागरूकता का तुम्हे इस समय अनुभव हो रहा है वह अस्थाई है.”

“मुझे क्या करना है?”

“इस समय कुछ नहीं करना है. आओ हम हस्पताल की जमीन के आसपास घूमते हैं और जो कुछ हमें मिलता उसे देखते हैं.”

रिक्की और वृद्ध आत्मा हस्पताल की गैलरी से होते हुए मुख्य लाबी में तैरते हुए गये, जहाँ जोहन, अपनी अन्तरंग मित्र मारी के साथ, अभी-अभी पहुंचा था.

रिक्की ने, जोहन की और देखते हुए, कहा, “हाय, जोहनी. दुर्घटना के लिये मुझे खेद है. चिंता मत करो, मैं ठीक हूँ.”

जोहन ने फ्रंट डेस्क पर रखे हुए खाते में दस्तखत किये और उसमें से निकलते हुए आपातकालीन कक्ष की ओर गया.

रिक्की हैरान होते हुए बोला, “वह मुझमें से निकल गया?”

“तुमने क्या उम्मीद की थी? तुम्हारे पास केवल नक्षत्रीय शरीर है. तुम मनुष्य की आँख के लिये अदृश्य हो.”

“हाँ. खेद है, मैं भूल गया था.”

“आओ बाहर चलते हैं.”

जब वह तैर कर बाहर निकले और हस्पताल के पीछे की ओर गये, तो रिक्की ने कुछ प्रेतों जैसे आकार देखे जो एक बेंच पर बैठे हुए थे. “उन भूतों को देखो जो बेंच पर बैठे हैं.”

“यह तुम्हारे जैसे व्यक्तियों के वायुवत सूक्ष्म शरीर हैं. उनके शरीर भी अचेतनावस्था में हैं. वह इस चीज का इंतजार कर रहे हैं कि आगे क्या होगा.”

रिक्की ने आगे देखते हुए कहा, “ओह, मेरे भगवान, मैं अपनी माँ को देख रहा हूँ.”

रिक्की की माँ की कुछ दशकों पहले स्तन कैंसर से मृत्यु हो गई थी. वह कान्तिमान और अपनी मृत्यु के समय तरेसठ वर्ष की उम्र से अधिक युवा दिख रही थी. वह गर्मजोशी से गले मिले.

“तुम्हारा हाल कैसा है? मैंने तुम्हे बहुत याद किया.”

माँ ने कहा, “मेरा बाद का जीवन बहुत शानदार रहा. तुम जानते हो आध्यात्मिक आयाम के घर में सूर्य हमेशा चमकता रहता है.”

“तुम वापिस मेरा मार्गदर्शन करने आई हो, क्या ऐसा नहीं है?”

माँ ने उत्तर दिया, “तब तक नहीं जब तक तुम तैयार न हो.”

“आओ मैं तुम्हारा परिचय वृद्ध आत्मा से करवाता हूँ.”

माँ, वृद्ध आत्मा को जानबूझ कर आँख मारते हुए बोली, “यह भाग्यशाली था कि दुर्घटना के समय तुम रिक्की के साथ थे.”

वृद्ध आत्मा मुस्कराई. “अच्छा, तुम जानती हो, मैं कभी भी ज्यादा दूर नहीं रहा.”

रिक्की ने सुझाव दिया, “आओ चलते हैं और देखते हैं कि मेरे शरीर की क्या प्रगति है.”

जब वह आपातकाल कक्ष में तैर कर गये, तो उन्होंने जोहन को उसके सिरहाने उसका हाथ पकड़ कर बैठे हुए देखा. वह रोता रहा था और थका हुआ लग रहा था.

रिक्की ने टिप्पणी की, “मुझे उसका दुःख महसूस करने में मुश्किल हो रही है.”

वृद्ध आत्मा ने कहा, “अब तुम थोड़ा बेहतर समझे हो कि हम क्यों धरती पर जन्म लेते हैं. आध्यात्मिक आयाम में हम इस तरह की भावनाओं को अनुभव नहीं कर सकते. उनके बारे में और उनके प्रभाव के बारे में जानने के लिये केवल एक ही रास्ता है कि धरती पर एक भौतिक शरीर हो और उन्हें अनुभवों के द्वारा रचित किया जायें. परन्तु, एक बार यह हो जाये तो तुम हमेशा ही अपने पूर्व-जन्म में जा सकते हो और उस भावना को फिर से पूरे प्रभाव के साथ जी सकते हो, और प्रत्येक उस अनुभव को जो तुम्हे कभी उस जीवनकाल में हुआ था. यह स्टार ट्रेक में एक खाली डेक की भान्ति है. एक बार जब किसी जीवनकाल के लिये कार्यक्रम सक्रिय हो जाता है, तो तुम उस जीवनकाल के दौरान उसमें कभी भी जा सकते हो और उसे दोबारा से अनुभव कर सकते हो. इस तरह से, तुम प्रत्येक भावना को फिर से अनुभव कर सकते हो, जबकि उसी समय, तुम इसे सम्पूर्णता से समझ सकते हो कि तुम अपने बारे में क्या सीखने की कोशिश कर रहे हो जब तुमने इसकी रचना की थी.”

“हाँ, मैं अब उसे अधिक स्पष्टता से समझ सकता हूँ.”

“अब तुम यह भी समझ सकते हो कि तुमने धरती पर इतने अवतरण क्यों लिये. प्रत्येक अवतरण में, तुम एक अलग पहलु पर केन्द्रित होते हो. यह एक डीवीडी संग्रह बनाने जैसा है जिसे तुम बाद में देख सकते हो. तुम अपने जीवनों की रूपरेखा प्रत्येक संभावित भावना का अनुभव करने के लिये बनाते हो. संभावित भावनात्मक अनुभव वस्तुतः असीमित होते हैं, जो उस संस्कृति, जिसमें तुम अवतरित होते हो, तुम्हारे लिंग, शिक्षा, और आय स्तर पर, इत्यादि, और साथ ही साथ तुमने और तुम्हारे मित्रों ने अवतरण के दौरान क्या भूमिका निभाने के लिये निर्णय लिया है, पर निर्भर करता है.”

“क्या मैं हमेशा ही अपने मित्रों के साथ अवतरित होता हूँ?”

“हाँ, ज्यादातर हिस्से में. आध्यात्मिक आयाम में तुम्हारा एक बहुत बड़ा मित्र-समूह है, और प्रत्येक अवतरण से पहले, तुम यह चर्चा करते हो कि प्रत्येक अवतरण के लिये तुम्हारा लक्ष्य क्या होगा और एक-दूसरे के जीवन में तुम क्या भूमिका निभाओगे. उदाहरण के लिये, एक जीवनकाल में तुम अपने किसी मित्र के माता-पिता हो सकते हो और फिर अगले जीवनकाल में भूमिका बदल कर उस व्यक्ति के बच्चे हो सकते हो. या तुम बारी-बारी से एक के बाद एक जीवनकाल में एक-दूसरे को परेशान कर सकते हो या हानि पहुंचा सकते हो, ताकि तुम्हे उस तरह के भावनात्मक अनुभव का पता लग सके.”

“मुझे यह पसंद आया. मुझे याद है कि एक बार तुमने इस बारे में थोड़ा सा बताया था जब तुम मुझे अवसाद के बारे में बता रहे थे - कि कैसे हरेक को अलग-अलग भावनात्मक अनुभव होने चाहिये ताकि वह आध्यात्मिक रूप से विकसित हो सके.”

“हाँ, तुम इसी तरीके से निरंतर एक के बाद एक अवतरण में चलते रहते हो, जब तक कि तुम सारे अनुभवों जिन्हें तुम करना चाहते हो समाप्त नहीं कर लेते हो.”

“मुझे याद है कि तुमने यह कहा था कि एक समय मैंने लगभग 900 ईसवी में आइसलैंड में एक किसान की तरह, 19वी सदी में एक उत्तरी अमेरिकन की भांति, 18वी सदी में एक मस्तिष्क रूप से विकलांग बच्चे का, और 1930 के दशक में एक पोलिश ज्यू का जीवनकाल जिया था.”

“हाँ, और भी बहुत सारे हैं. एक बार जब तुम्हे वह सारे अनुभव हो जायें जो तुम लेना चाहते हो, तो तुम समुचित रूप से आध्यात्मिक आयाम में ऊपरी स्तर तक जाने के लिये विकसित हो चुके होगे, जहाँ तुम्हे विभिन्न अनुभव उपलब्ध हैं.”

“दूसरी तरह के कौन से अनुभव?”

“यह असीमित हैं. उदाहरण के लिये, तुम ज्येष्ठ परिषद में बैठ सकते हो, जहाँ तुम आत्माओं के उनके धरती पर अवतरण से लौटने के थोड़ी देर बार उनके द्वारा किये गये अनुभवों का विशलेषण करने में सहायता कर सकते हो. तुम उन आत्माओं के लिये जो अवतरित होती हैं, एक मार्गदर्शक या एक फिलगजा की भांति काम कर सकते हो, जैसा कि मैंने तुम्हारे साथ किया है. तुम खोई हुई

आत्माओं का या उनके अंशों का उद्धार कर सकते हो, जिन्हें अपने अवतरण के बाद वापिस आने का रास्ता नहीं मिला. तुम आत्माओं को अगले अवतरण से पहले तैयारी करने में सहायता कर सकते हो. तुम प्रारंभिक मार्गदर्शन और नई पैदा हुई ऊपरी-आत्माओं की सेवा कर सकते हो जब वह दूसरे गैर-भौतिक आयाम में पहले विकिसित होती हैं. तुम दूसरे आयामों में नए संसार की रूप-रेखा पर और नये जीवन-रूपों की रूप-रेखा बनाने पर काम कर सकते हो. सूची असीमित है."

रिक्की ने उत्सुकतापूर्ण कहा, "मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी."

माँ ने रिक्की के शरीर को देखते हुए कहा, "रिक्की ऐसा लगता है तुम्हारा शरीर कुछ समय के लिये बेहोश रहेगा. यह काफी क्षतिग्रस्त हो गया लगता है. लगता है जब तुम्हारा सिर टकराया था तो तुम्हारे मस्तिष्क को भी चोट पहुंची थी."

"वह अच्छा नहीं लग रहा है. मुझे अचम्भा हो रहा है कि अगर मेरा शरीर काफी ठीक हो गया और मैं इस दुर्घटना से बच जाऊं तो कहीं मैं मस्तिष्क रूप से विकलांग न हो जाऊं?"

वृद्ध आत्मा ने, उसके शब्दों पर ध्यान देते हुए ताकि रिक्की के निर्णय को प्रभावित न करे, कहा, "यह हो सकता है कि तुम्हे कुछ दिमागी मुश्किलें आयेंगी."

"पहले ही अतीत में मेरा जीवन छोटा रहा है. मैं मस्तिष्क रूप से विकलांग था. मैं नहीं समझता कि मैं एक और ऐसे जीवन के लिये तैयार हूँ, विशेषतया तब, जब तुमने एक बार इंगित किया है, कि उस जीवनकाल में मैंने अपने सारे मुद्दे अभी नहीं सुलझाये हैं."

"यह अलग होगा. तुम अपनी बुद्धिमत्ता को कायम रखोगे, लेकिन तुम्हारा दिमाग सही तरीके से काम नहीं करेगा. तुम्हे बोलने में तकलीफ होगी, और तुम्हारे शरीर को दाहिनी तरफ से लकवा मार जायेगा. निश्चय ही यह एक सीखने वाला अनुभव होगा, यदि तुम उस अनुभव को कुछ वर्षों के लिये लेना चाहोगे तो."

"मुझे नहीं मालूम मुझे क्या करना चाहिये. मैं जानता हूँ जोहनी के पास बाकी के दिनों में मेरी देखभाल करने के अतिरिक्त करने के लिये और भी बेहतर चीजें हैं."

वृद्ध आत्मा ने माँ से कहा, "तुम इसे घर क्यों नहीं ले जाती और देखो कि क्या ज्येष्ठ परिषद उपलब्ध है? इस स्थिति से बाहर निकलने में वह हमारी सहायता कर सकते हैं."

माँ ने रिक्की को कहा, "ठीक है. मेरा हाथ पकड़ो, और मैं तुम्हे प्रकाश में ले कर जाती हूँ. "

उसी क्षण, रिक्की और उसकी माँ आकाश में ऊपर उठना शुरू हो गये क्योंकि एक अदृश्य बल ने उन्हें ऊपर खींच लिया था.

रिक्की ने, आसपास देखते हुए, कहा, "मैं सारे शहर को और उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्र को यहाँ ऊपर से देख सकता हूँ."

माँ ने कहा, “ऊपर देखो----------.”

“मैं एक चमकीला प्रकाश देख रहा हूँ.”

उसी क्षण, एक सुंदर, शांत प्रकाश ने उन्हें घेर लिया. रिक्की को आनंद और पूर्वानुमान का उन्माद महसूस हुआ. ऊपर कोई उपस्थित प्रतीत हो रहा था, लेकिन वह अंदाजा नहीं लगा पाया. शक्ति उन्हें रौशनी की गति से निरंतर चलाती रही, जब अचानक ही, वह धीमे हो गये और एक अंधकारमय जगह में तैरने लगे जो लगता था दोनों ओर से बड़े और छोटे चमकते हुए गोलाकार झुंडों से भरी हुई लग रही थी, जहाँ तक आँख देख सकती थी.

माँ ने कहा, “अच्छा, हम पहुँच गये. घर में तुम्हारा स्वागत है.”

“यह मुझे हीथर हिल के अंदर का याद दिलाता है, जब मैं वृद्ध आत्मा से मिला था.”

माँ ने कहा, “हाँ, यह आध्यात्मिक ब्रह्माण्ड है. क्या यह तुम्हे अब परिचित लग रहा है?”

“मुझे यह महसूस हो रहा है कि मैं पहले भी यहाँ आया हूँ.”

माँ ने कहा, “तुम्हारी यादें जल्दी ही लौट आयेंगी. आगे गोलों का झुण्ड देखो? अपने आप को वहाँ ले जाओ. वहाँ कुछ दोस्त तुम्हारे पहुँचने का इंतजार कर रहे हैं. मुझे कुछ काम करने हैं, और मैं तुमसे बाद में मिलूंगी. रिक्की ने इस जगह को पहले हीथर हिल में देखा था, जब वह वृद्ध आत्मा के अध्ययन कक्ष में बैठा था. लेकिन इस बार वह अपने-आप को धकेल सकता था, आगे की ओर जो गोलों के कुछ गाँव से लग रहे थे. जब वह आगे की तरफ तैर कर रौशनियों के झुण्ड की ओर गया, तो उसने अचानक ही अपने-आप को एक बड़े हाल में, एक लम्बी मेज के सामने खड़े हुए पाया जिसके पीछे की ओर पांच व्यक्ति बैठे हुए थे. वृद्ध आत्मा पहले ही हाल में पहुँच चुकी थी और उसके पीछे खड़ी थी, थोड़ा उसके बायें ओर. रिक्की ने एकदम पहचान लिया कि यह जयेष्ठं परिषद थी, और वह जानता था वह उसके आने की उम्मीद कर रहे थे. उन्होंने परिधान पहने हुए थे. उन सभी ने अपने-अपने गले में अलग-अलग तरह के पेंडेंट पहने हुए थे, और उन सभी में से अलग-अलग तरह के रंगों के आभामंडल निकल रहे थे. जो व्यक्ति बीच में बैठा था उसने उसे पहले संबोधित किया. कोई भी शब्द नहीं बोला जा रहा था. सम्पर्क शुद्ध रूप से दूरसंवेदी था.

ज्येष्ठ ने कहा,”घर में तुम्हारा स्वागत है, रिक्की, तुमने अपने सबसे हाल ही के जीवनकालों में बहुत अच्छा किया है.”

रिक्की ने हिचकिचाते हुए कहा, “धन्यवाद.”

ज्येष्ठ ने कहा, “परन्तु तुम जल्दी आ गये हो. तुम्हारे समसामयिकों में अभी कोई भी नहीं लौटा.”

रिक्की ने कहा, “अच्छा, मेरा शरीर एक दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया था. यह अब अचेतन अवस्था में है, और मैं निश्चित नहीं हूँ कि मैं इसमें रहना चाहूँगा, क्योंकि यह क्षतविक्षत लग रहा है.”

ऐसा लग रहा था कि ज्येष्ठ कुछ देर के लिये आपस में वार्तालाप करते रहे और फिर जो बीच में बैठा था उसने उसे फिर सम्बोधित किया, “यह बैठक तुम्हारे जीवनकाल के पुनरावलोकन के लिये नहीं होगी, जैसा कि इन परिस्थितियों में सामान्यतया होता है. हम इंतजार करेंगें और उसे फिर कभी करेंगें. इसके बजाय यह एक उत्सव होगा, तुम्हारे अपनी ऊपरी-आत्मा से औपचारिक रूप से मिलने का एक अवसर. अब, इसे रहने दो.”

परिषद ज्येष्ठ ने अपनी बाहें खोल कर इशारा किया, और वृद्ध आत्मा आगे आई. उस क्षण, रिक्की ने पहचाना कि वह और वृद्ध आत्मा एक ही थे. उसकी ऊपरी-आत्मा वृद्ध आत्मा थी; वह अपने सारे जीवनकाल में अपना ही मार्गदर्शक रहा था. रिक्की हक्का-बक्का रह गया था और उसकी आवाज नहीं निकल रही थी, जब वह वृद्ध आत्मा की ओर आनंद-मिश्रित आंसुओं और एक प्रेममयी आलिंगन के लिये मुड़ा. थोड़ा गले मिलने के उपरान्त, वृद्ध आत्मा ने ख़ुशी से अपने हाथों से ताली बजाते हुए कहा, “अब तुम समझे, हम एक हैं - फिर भी हम एक नहीं हैं!”

जो वृद्ध आत्मा कह रही थी, रिक्की उसे सम्पूर्ण रूप से समझ गया, क्योंकि कुछ चर्चाओं की यादें, जो उसने वृद्ध आत्मा के साथ अपने अवतरण से पहले की थी, अब उसकी चेतना में आ गईं थी. अब वह जानता था कि कैसे ऊपरी-आत्मा ने सदियों में दर्जनों आत्माएं बनाई थी, और यह कि ‘वह था - फिर भी वह उनमें से प्रत्येक का अंश नहीं था.’

ज्येष्ठ ने अब शुरू किया और कहा, “सामान्यतया, इस समय तुम अपनी ऊपरी आत्मा में शामिल हो जाओगे और उसमें मिल जाओगे, फिर भी अपना व्यक्तित्व रखते हुए; जैसे कि सभी आत्माओं ने किया है जो उसने पिछले अवसरों पर भेजी हैं, जिसमें कुछ को तुमने अपने अतीत में जिए जीवनों को पहले ही देख लिया है. लेकिन क्योंकि तुम जल्दी आ गये हो, हम तुम्हे अपने भौतिक शरीर में जाने के लिये एक प्रस्ताव करेंगें देंगें. हम तुम्हारे शरीर की चोटों को ठीक करने में सहायता करेंगें. और, आज से, तुम अपनी ऊपरी आत्मा से, जिसे तुम वृद्ध आत्मा के रूप में जानते हो, पूरी तरह से परिचित रहोगे, और तुम हीथर हिल जाये बिना उसके साथ अपने सपनों में ज्यादा सरलता से बात कर सकोगे.”

रिक्की ने उत्तर दिया, “धन्यवाद. वह अद्भुत होगा. मैं कुछ और वर्षों के लिये आभारी रहूँगा, बशर्ते कि मेरा शरीर काफी हद तक सामान्य रूप से कार्य करे.”

उसी क्षण परिषद हाल में एक छेद खुला, और रिक्की देख सकता था कि हस्पताल के बिस्तर पर उसका शरीर कहाँ पड़ा था. परिषद के ज्येष्ठो ने प्रार्थना में शामिल हो कर अपनी उपचारात्मक उर्जा को शरीर की ओर केन्द्रित किया, और रिक्की देख सकता था कि उसके प्राणाधार लक्ष्ण सामान्य होने शुरू हो गये थे.

ज्येष्ठ ने कहा, “रिक्की, अब समय आ गया. छेद में जाओ, और अपने शरीर में चले जाओ. जब तुम्हारी आत्मा शरीर के अंदर सुरक्षित हो जायेगी तो हम काम को पूरा कर देंगें.”

रिक्की ने भंवर में कदम रखा, और, एक ही क्षण में, उसने अपने आप को अपने परिचित शरीर में फिर से पाया जब उसकी चेतना लौट आई, वह पीड़ा में था लेकिन पूरी तरह से चौकन्ना. यह एक मृत्यु के निकट होने का अनुभव था जिसके द्वारा भौतिक अस्तित्व की सारी घबराहट एक ही क्षण में लुप्त हो गई थी.

क्रमश:

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें